Deccan Education Society's

Fergusson College (Autonomous), Pune

Department of Hindi (हिंदी)

Syllabus
for
T. Y. B. A. (हिंदी)

To be implemented from academic year 2021-22

Sem.	Paper No.	Course code	Title	Credits	CE maximum Marks	ESE maximum Marks	Total maximum Marks
V	DSE 1C	HIN3501	हिंदी साहित्य का इतिहास- I (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)	4	50	50	100
	DSE-2C	HIN3502	भारतीय काव्यशास्त्र	4	50	50	100
	SEC-1C	HIN3503	रेखाचित्र और लेखन	3	50	50	100
	SEC-2C	HIN3504	चलचित्र लेखन - I	2	50	-	50
			Total Credits	**13**			**350**
VI	DSE-1D	HIN3601	हिंदी साहित्य का इतिहास- II (आधुनिक काल)	4	50	50	100
	DSE-2D	HIN3602	काव्यशास्त्र और आलोचना	4	50	50	100
	SEC-1D	HIN3603	नाटक और लेखन	3	50	50	100
	SEC-2D	HIN3604	चलचित्र लेखन - II	2	50	-	50
			Total Credits	**13**			**350**

**** Note: SEC 1C is CC'1 or 2' (General paper for other department students)***

**** Note: SEC 1D is CC-'1 or 2' (General paper for other department students)***

T. Y. B.A. Semester V

Title of the Course and Course Code	हिंदी साहित्य का इतिहास- (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल) (HIN3501)	Number of Credits : 04
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास से अवगतकरना । आदिकाल की पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना। रासो साहित्य की विशेषताओं को उद्धरत करना । आदिकालीन रचनाकारों का परिचय देकर उनके रचनाओं को सारणीबदध कर बताना।	
CO2	भक्तिकाल की पृष्ठभूमि पीआर चर्चा करना । ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, कृष्णभक्ति और रामभक्ति शाखाओं के अंतर को स्पष्ट करना । कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई की रचनाकारों की व्याख्या करना ।	
CO3	ज्ञानाश्रयी शाखा के भक्त कवियों का वर्गीकृत करना । इस शाखा में गुरु का सम्मान, जाति-पातिप्रथा, वैयक्तिक साधना, रूढियों का विरोध को समझना ।प्रेमाश्रयी शाखा के मुस्लिम सूफी काव्य की व्याख्या करना । फ़ारसी की मसनवी शैली को जाँचना ।	
CO4	कृष्णाभक्ति शाखा का विश्लेषण करना । एक ही संप्रदाय के उच्च कोटि के कवियों की तुलना करना । रामभक्ति शाखा के अंतर्गत लीला-पुरुषोत्तम राम का विवेचन करना । रामचरितमानस ग्रंथ का महत्व को पहचानना ।	
CO5	रीतिकाल का अर्थ, रस, अलंकार, गुण, ध्वनि और नायिका भेद आदि काव्यांगों के आधार पर मूल्यांकन करना । अलंकार काल और कला काल की संज्ञाओं की तुलना करना । रीतिकाल नाम ही सर्वाधिक सार्थक और प्रचलित हैं इसका समर्थन करना । रीतिकालीन साहित्य विशेषताओं की आलोचना करना ।	
CO6	रीतिकालीन केशवादास, बिहारी और घनानंद कवियों रचनाओं को संकलित करना ,भाषा, अलंकार, शब्द योजना, संवदेना, रस आदि संश्लेषित कर के फिर से लिखना।	

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	आदिकाल की पृष्ठभूमि- राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियां, काल विभाजन एवं नामकरण आदिकालीन वीरगाथा तथा रासों साहित्य की प्रवृत्तियाँ, आदिकालीन रचनाकारों का परिचय – चंदबरदाई,आमिर खुसरो, गोरक्षनाथ।	15
II	भक्तिकाल की पृष्ठभूमि- राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियां ,निर्गुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ - ज्ञानाश्रयी ,तथा प्रेमाश्रयी शाखा की विशेषताएँ,सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ – कृष्णभक्ति,और रा मभक्ति शाखा की विशेषताएँ ।	15
III	निम्नलिखित रचनाकारों का परिचय - कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई और रसखान।	04
IV	रीतिकाल की पृष्ठभूमि- राजनीतिक,सामाजिक,साहित्यिकपरिस्थितियाँ ,रीतिकाल का नामकरण, रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ । रीतिकालीन कवियों का परिचय - केशवदास, बिहारी, भूषण ।	14

References:

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन
4. भक्ति आंदोलन - डॉ. शिवकुमार
5. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार
6. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाबराय ।

T. Y. B.A. Semester V

Title of the Course and Course Code	भारतीय काव्यशास्त्र (HIN3502)	Number of Credits : 04
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	काव्य हेतुओं की सूची बनाना। काव्य की संस्कृत, हिंदी आदि परिभाषाओं को बताना । अलंकारों को सोदाहरण बताना। काव्य के तत्वों को उद्धृत करना।	
CO2	काव्य हेतु (कारण) की तुलना करना। काव्य प्रयोजन (उद्देश्य) का वर्गीकरन कर के उसकी चर्चा करना। काव्य के तत्वों के अंतर को स्पष्ट करना। भाव तत्व , बुद्धि तत्व आदि को विस्तार प्रदान करना।	
CO3	हिंदी और संस्कृत काव्यप्रयोजनों की गणना करना। शब्द शक्ति के द्वारा अर्थ का अनुमान लगाना। लक्षणा के भेदों का वर्गीकरन करना।	
CO4	अलंकारों का वर्गीकरन करना। शब्दालंकार और अर्थालंकार की तुलना करना। काव्य के भेदों को स्पष्ट करना।	
CO5	परिभाषाओं के आधार पर काव्य मूल्यांकन करना । काव्य की आलोचना के मानदंडों की समीक्षा करना। शब्द शक्ति के आधार पर कवयलोचना करना।	
CO6	शब्दालंकार और अर्थालंकार का संकलन करना। काव्य की नवीन परिभाषा की रचना करना।शब्द शक्ति को एकीकृत करना। आलोचना का पुनर्गठन कर फिर से लिखना ।	

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	काव्य (साहित्य) का अर्थ, स्वरूप, काव्य की, संस्कृत, हिंदी तथा अग्रेजी सर्वाधिक प्रचलित परिभाषा,काव्य हेतु (कारण) और काव्य प्रयोजन (उद्देश्य) का सामान्य परिचिय ।	16
II	काव्य के तत्व - भाव तत्व, बुद्धितत्व, कल्पना तत्व, शैली तत्व, शब्दशक्ति - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना का सामन्य परिचिय ।	10
III	काव्य के भेद (प्रकार): प्रबंध काव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक काव्य,गीतिकाव्य,गज़ल का सामान्य परिचय	12
IV	अलंकार: अलंकर का स्वरूप, काव्य में अलंकार का महत्व, निम्नलिखित अलंकारों का परिचिय:शब्दालंकार:अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति। अर्थालंकार: उपमा, दृष्टांत, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति।	10

References:

1. काव्यशास्त्र - डॉ. भगीरथ मिश्र
2. काव्य के तत्व - आ. देवेंद्रनाथ वर्मा
3. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
4. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त
5. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह।

T. Y. B.A. Semester V

Title of the Course and Course Code	रेखाचित्र और लेखन (HIN3503)	Number of Credits : 03
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	रेखाचित्र के आंतरिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से निष्कर्षात्मक वर्गीकृत करना। हिंदी की प्रमुख विधाओं से परिचित करके रेखाचित्र विधा को व्यवस्थित करके फिर से लिखना।	
CO2	रेखाचित्र का विवेचन एवं विश्लेषणों का वर्गीकृत करना। इसमें अपने जीवन में सभी सच्चाइयों को अभिव्यक्त करना ।	
CO3	छात्रों को कार्यक्रम संयोजन की रूपरेखा को समझाते हैं। साथ ही सुत्रसंचालन के बारे में उदाहरण देना। हिंदी से संबंधित कार्यक्रमों के संचालान के बारे में व्याख्या करना।	
CO4	पारिभाषिक शब्दों के पृष्ठभूमि के रूप में दैनिक जीवन के शब्द न होकर गणित, भौतिकी, अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र, रसायन, दर्शन, इंजीनियरी, विधि, वाणिज्य आदि सामान्यीकरण करना।	
CO5	हिंदी भाषा व साहित्य के विकास के साथ ही हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का भी विकास हुआ, जिनका प्रयोग कार्यालयों व व्यापार आदि निरूपित करना।	
CO6	अनुवादक (translator) का कार्य स्रोतभाषा के पाठ को अर्थपूर्ण रूप से लक्ष्यभाषा में अनूदित करता है। काव्यानुवाद की व्याख्या करना । भाषा ज्ञान, विषय ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, व्यक्तिगत गुण आदि की दृष्टि वर्गीकृत करना।	

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	महादेवी वर्मा का परिचय,रेखाचित्र विधा का परिचय ,रामा,भाभी बिन्दा,सबिया,बिटटो,बालिका,माँ, अभागी	32
II	कार्यक्रम संयोजन कौशल का परिचिय:इसमें संकल्पना एवं, स्वरूप, उद्देश, कार्याक्रम की प्रस्तावना, परिचय, स्वागत, सम्मान, सूत्रसंचालन, अभिमत, आभार ज्ञापन, कार्यक्रम पत्रिका आदि।	10
III	पारिभाषिक शब्दावली: सूची संलग्न, अनुवाद लेखन: मराठी/अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद	06

References:

1. अतित के चलचित्र – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. व्यावहारिक हिंदी और रचना - कृष्णकुमार गोस्वामी
3. सामान्य हिंदी - डॉ. केदार शर्मा, डॉ. महेंद्र मिश्रा
4. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे ।

T. Y. B.A. Semester V		
Title of the Course and Course Code	चलचित्र लेखन - I **(HIN3504)**	**Number of Credits : 02**
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	छात्र भारतीय सिनेमा के इतिहास से परिचित होते हैं।	
CO2	छात्रों को मूक और सवाक् फिल्में से जीवन के सभी सच्चाइयों को परिचित करना ।	
CO3	हिंदी फिल्में, फिल्मी गीत तथा प्रसिद्ध संवाद से छात्र अवगत होकर उसे वर्गीकृत करते हैं।	
CO4	प्रसिद्ध निर्देशक एवं अभिनेता से छात्रों से अध्ययन करवाया जाता है।	
CO5	हॉलीवूड फिल्मों की हिंदी डबिंग के बारे में छात्रों को जानकारी दी जाती है।	
CO6	बॉलीवूड का हिंदी फिल्म उद्योग के बारे में छात्र परिचित होते हैं।	

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	भारतीय सिनेमा का इतिहास ,हिंदी की आरंभिक मूक और सवाक् फिल्में ,विगत शताब्दी की लोकप्रिय हिंदी फिल्में, लोकप्रिय फिल्मी गीत तथा प्रसिद्ध संवाद।	12
II	प्रमुख निर्देशक एवं अभिनेता, हॉलीवुड फिल्मों की हिंदी डबिंग,बॉलीवुड का हिंदी फिल्म उद्योग।	12

References:

1. हिंदीसिनेमाऔरउसकाअध्ययन डॉ.रमा
2. महात्मा गांधी और सिनेमा – जयप्रकाश चौकसे
3. हिंदी सिनेमा में हाशिये का समाज – संपा. गौरीनाथ
4. सिनेमा में नारी – शमीम खान
5. हिंदी सिनेमा के 150 सितारे – विनोद विप्लव।

T. Y. B.A. Semester VI		
Title of the Course and Course Code	हिंदी साहित्य का इतिहास-II (आधुनिक काल) **(HIN3601)**	**Number of Credits : 04**
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	आधुनिक काल का हिंदी पद्य साहित्य के विकास वर्गीकृत करना। आधुनिक काल में भारतेंदु, द्विवेदी, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नयी कविता, साठोत्तरी कविता के प्रमुख कवि और काव्य की विशेषताओं से वर्गीकृत करके पुन: व्यवस्थित करना।	
CO2	आधुनिक काल के माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर,सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला',जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, भवानीप्रसाद मिश्र,मुक्तिबोध,धूमिल, मंगलेश डबराल आदि कवियों पुन: व्यवस्थित करना।	

CO3	हिंदी नाटकों में भारतेंदु और जयशंकर का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है । उन्हें केंद्र में रखकर हिंदी नाट्य साहित्य को प्रसाद पूर्व हिंदी नाटक, प्रसाद युगीन हिंदी नाटक, प्रसादोत्तर स्वतंत्रता पूर्व हिंदी नाटक और स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक से वर्गीकृत करके पुन: व्यवस्थित करके फिर से लिखना।
CO4	हिंदी उपन्यास विकास को प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास, प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास आदि को वर्गीकृत करके फिर से लिखना।
CO5	हिंदी कहानी में प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी, प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी, प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी, समकालीन हिन्दी कहानी से पुन: व्यवस्थित करना। निबंध के तत्व और उदभव और विकास को पारिभाषित करना और छात्रों से चर्चा करना।
CO6	रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, फनीश्वरनाथ रेणु, भगवतीचरण वर्मा, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, श्रीलाल शुक्ल, सुधा अरोडा, ममता कालिया आदि रचनाकारों का परिचय एवं साहित्यिक परिचय निरूपित करना।

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	निम्नलिखित काव्यधाराओं का संक्षिप्त परिचय : भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता।	20
II	निम्नलिखित कवियों का परिचय: माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा,अज्ञेय,भवानीप्रसाद मिश्र,मुक्तिबोध,धूमिल, मंगलेश डबराल।	09
III	निम्नलिखित गद्य विधाओं का विकासात्मक संक्षिप्त परिचय: नाटकका उद्भव और विकास ,उपन्यास का उद्भव और विकास,कहानीका उद्भव और विकास,निबंध का उद्भव और विकास	12
IV	निम्नलिखित गद्यकारों का परिचय :रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद,जैनेंद्र कुमार, फनीश्वरनाथ रेणु, भगवतीचरण वर्मा, 4 भीष्म साहनी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, श्रीलाल शुक्ल, सुधा अरोडा, ममता कालिया ।	7

References:

1. आधुनिक साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास - मोहन अवस्थी
2. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ - डॉ. शशिभूषण सिंहल
3. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास - डॉ. सुमन राजे
4. आधुनिक कविता का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीनारायण चातक
5. आधुनिक कविता की मुख्य प्रवृतियाँ - डॉ. नगेंद्र
6. बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य - विनयमोहन सिंह ।

T. Y. B.A. Semester VI		
Title of the Course and Course Code	भारतीय काव्यशास्त्र और आलोचना **(HIN3602)**	**Number of Credits : 04**
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	गद्य के भेदों की सूची बनाना। कहानी ,उपन्यास, निबंध आदि परिभाषाओं को बताना , उपन्यासों को सारणीबद्ध करना । रेखाचित्र के तत्वों को उद्धृत करना।	
CO2	नाटकों की प्रकार के अनुसार तुलना करना। माध्यम के आधार पर नाटकों का वर्गीकरन कर उसकी चर्चा करना। नाटक और एकांकी के तत्वों के अंतर को स्पष्ट करना। भाव तत्व , गीति नाट्य , काव्य नाट्य आदि को विस्तार प्रदान करना।	

CO3	रस के अंगों की गणना करना। रस का परिचय प्राप्त करते हुए अनुमान लगाना। स्थायी भाव, विभाव ,अनुभाव आदि भेदों का वर्गीकरन करना।
CO4	हिंदी नाटककारों की रचनाओं का वर्गीकरन करना। एकांकी और रेडियो नाटक की तुलना करना। नाटक के भेदों को स्पष्ट करना।
CO5	आलोचना के आधार पर साहित्य का मूल्यांकन करना । आलोचक के गुणों की समीक्षा करना। आलोचना की परिभाषा और स्वरूप आधार पर रचना का मानकीकरण करना।
CO6	वार्णिक और मात्रिक छंदों का संकलन करना। काव्य में छंद के महत्व को स्पष्ट करना। छंदों के स्वरूप को एकीकृत करना। छंदों को उद्धरण देकर समझाना तथा फिर से लिखना ।

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	गद्य के भेद: उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र ।(इन विधाओं का केवल तात्विक परिचिय तथा उपन्यास और कहानी की तुलना),दृश्य काव्य, नाटक की परिभाषा और तत्व: (भारतीय दृष्टि से तत्वों का स्थूल परिचय), माध्यम के आधार पर नाटक के भेद:रंगमंचीय नाटक,रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक का सामान्य परिचय , काव्य नाटक/गीतिनाट्य: स्वरूप एवं तात्विक परिचय,एकांकी: परिभाषा और तत्व,नाटक और एकांकी की तुलना ।	16
II	रस की परिभाषा एवं स्वरूप, रस के अंग: स्थायी भाव,विभाव, अनुभाव और संचारी भाव, रसों का सोदाहरण परिचय: श्रृंगार रस, करुण रस,वीर रस और हास्य रस।	10
III	छंद: काव्य में छंद का महत्व,वर्णिक और मात्रिक छंदों का स्वरूप,मात्रिक छंद: दोहा,सोरठा,रोला,चौपाई,बरवै,वर्णिक छंद: शिखरिणी,द्रुतविलंबित,भुजंगप्रयात,मनहरण, कवित्त, दुर्मिल, मंदाक्रांता, सवैया।	12
IV	आलोचना:आलोचना का स्वरूप,उद्देश्य एवं आवश्यकता आलोचक के गुण ।	10

References:

1.भारतीय तथा पाश्चात काव्यशास्त्र - डॉ. विश्वंभरनाथ उपध्याय

2.समीक्षा शास्त्र के भारतीय मानदंड - डॉ. यतीन्द्र तिवारी

3.भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

4. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त।

T. Y. B.A. Semester VI		
Title of the Course and Course Code	नाटक और लेखन **(HIN3603)**	**Number of Credits : 03**
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	हिंदी नाटक विधा का उद्भव को उद्धृत किया हैं। साथ ही नाटक के कथानक और वेशभूषा से निरूपित करना।	
CO2	नाटक, साहित्य की वह विधा है, जिसकी सफलता का परीक्षण करते हैं। नाटक का उद्देश्, रस, संवाद, मंच सज्जा, ध्वनि योजना आदि की उद्धृत करते हैं।	

CO3	संक्षप्तियां को सूक्ष्म से सूक्ष्म विवेचन करके अर्थ को रूपांतरित करते हैं। छात्रों को अर्थ स्पष्ट करके उस संबंध में कौन-सा विभाग या कौन-से पद के नाम से रूपांतरित करते हैं उसकी चर्चा की जाती है।
CO4	संवाद सृजन प्रक्रिया के साथ जुड़नेवाली कला है। संवादों के माध्यम से कहानी को कथात्मक रूप से संवादात्मक और नाटकीय रूप प्राप्त होता है, जिसका उपयोग अभिनय के दौरान होता है। इन्हीं संवाद कला को छात्रों से पुन: व्यवस्थित करना।
CO5	पटकथा किसी फ़िल्म या दूरदर्शन कार्यक्रम के लिए पटकथा लेखक द्वारा लिखा गया कच्चा चिटठा तैयार करना। टेलीविजन के संबंध में संवाद को संशोधित करना।
CO6	सरकार को कामकाज से सम्बन्धित पत्र सरकारी या शासकीय पत्र को संकलित करना। सरकार के कामकाज के सम्बन्ध में विभिन्न तरह के पत्राचार प्रबंधित करना।

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	नाटक के तत्व ,जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय ,चन्द्रगुप्त नाटक	30
II	संक्षिप्तियाँ:सूची संलग्न,टेलीविजन, फिल्म संवाद और पटकथा	10
III	सरकारी पत्रलेखन –परिपत्र, कार्यालय आदेश,अधिसूचना	08

References:

1. चंद्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद
2. काव्यशास्त्र - भगीरथ मिश्र
3. हिंदी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ - डॉ. दमयंती श्रीवास्तव, राका प्रकाशन, इलाहाबाद
4. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच - डॉ. नरेंद्र मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिंदी नाटक उद्भव और विकास - दशरथ ओझा
6. स्वातंत्र्योत्तर मंचीय हिंदी नाटक –संपा. डॉ. जयराम गाडेकर

T. Y. B.A. Semester VI		
Title of the Course and Course Code	**चलचित्र लेखन - II (HIN3604)**	**Number of Credits : 02**
Course Outcomes (COs) On completion of the course, the students will be able to:		
CO1	छात्र फिल्म निर्माण की प्रक्रिया से परिचित होते हैं।	
CO2	हिंदी पटकथा लेखन का क्रमिक विकास और संवाद लेखन-प्रणाली को छात्र से विश्लेषित करना।	
CO3	रीमेक फिल्मों का भाषिक पक्ष और समकालीन हिंदी फिल्मों की भाषिक संरचना से छात्र अवगत होते है।	
CO4	अभिनेताओं द्वारा उच्चारित संवादों का स्वनिम के आधार पर छात्र को विश्लेषित होते है।	
CO5	हिंदी की विश्व व्याप्ति में फिल्मों की भूमिका का महत्व छात्र समझाते हैं।	

CO6	हिंदी की प्रमुख फिल्मों के आधार पर भाषिक संरचना का व्यावहारिक प्रशिक्षण से छात्रों को अवगत करते हैं।

Unit No.	Title of Unit and Contents	No. of Lectures
I	फिल्म निर्माण की प्रक्रिया, हिंदी पटकथा लेखन (सिनेरिया) का क्रमिक विकास, संवाद लेखन-प्रणाली या प्रविधि, रीमेक फिल्मों का भाषिक पक्ष, समकालीन हिंदी फिल्मों की भाषिक संरचना, वृत्त चित्र की निर्माण पदधति, फीचर।	12
II	हिंदी में निर्मित विज्ञापन फिल्में (एड् फिल्में), फिल्मी अभिनेताओं द्वारा उच्चारित संवादों का स्वनिम के आधार पर विश्लेषण, हिंदी की विश्व व्याप्ति में फिल्मों की भूमिका, हिंदी की प्रमुख फिल्मों के आधार पर भाषिक संरचना का व्यावहारिक प्रशिक्षण -देवदास (तीनों निर्मितियाँ) तथा शोले।	12

References:

1. हिंदी सिनेमा आदि के अनंत – डॉ. प्रहलाद अग्रवाल
2. भारतीय समाज हिंदी सिनेमा और स्त्री –सुलभा कोरे
3. हिंदी में पटकथा लेखन –ज़ाकिर अली रजनीश
4. हिंदी सिनेमा एक अध्ययन – राजेश कुमार
5. समय, सिनेमा और इतिहास – संजीव श्रीवास्तव ।